शौरसेनी आगम साहित्य

प्र० शौरसेनी आगम साहित्य का सामान्य परिचय दें।

Ans मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा में शौरसेनी आगम साहित्य का विशेष महत्व है। शौरसेनी भाषा में रचित अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं, जो इस प्रकार है:

षट्खण्डागम :

शौरसेनी भाषा में रचित षट्खण्डागम आगम साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके रचयिता आचार्य पुष्पदंत एवं भूतबलि हैं जिनके गुरू आचार्य धरसेन हैं। यह ग्रन्थ निम्न छः खण्डों में विभक्त है :—

(1) जीव स्थान (2) क्षुद्रक बंध (3) बंध स्वामित्व विचय (4) वेदना खण्ड (5) वर्गणा खण्ड (6) महाबन्ध।

1) जीव स्थान :

प्रथम खण्ड का नाम जीव स्थान है। इसमें जीव के गुण, धर्म और नाना अवस्थाओं का वर्णन आठ प्ररूपणाओं में किया गया है। इसमें कई सिद्धांतों का अच्छा निरूपण हुआ है।

2) क्षुद्रक बन्ध :

दूसरा खण्ड का नाम क्षुद्रक बंध है। इसमें 13 अधिकार हैं। इनमें मार्गणास्थानों के अनुसार जीव के बंधक - अबंधक स्वरूप का ग्यारह अनुयोगों द्वारा विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

3) बंध स्वामित्व विचय :

तीसरा खण्ड बंध स्वामित्व विचय है। इसमें 324 सूत्र हैं। इनमें बंध के स्वामी के संबंध में प्रकाश डाला गया है। साथ ही इसमें प्रकृतियों का बंध, उदय, सत्व, बन्धुव्युच्छिति आदि का विस्तृत विवेचन किया गया है।

Scanned by CamScanner

4) वेदनाखण्ड :

चौथे खण्ड का नाम वेदना खण्ड है। कर्म प्राभृत के 24 अधिकारों में से कृति और वेदना नामक प्रथम दो अनुयोगों का नाम वेदनाखण्ड है, जिनमें कुल 1+1+9 सूत्र हैं जिसके माध्यम से वेदना के स्वरूपादि का विवेचन किया गया है।

5) वर्गणाखण्ड :

पांचवा खण्ड वर्गणा खंड है। इसमें स्पर्श, कर्म और प्रकृति नामक तीन अनुयोग द्वारों का प्रतिपादन किया गया है। इन तीन अनुयोग द्वारों में क्रमशः 63, 39 और 142 सूत्र हैं।

6) महाबन्ध :

छठवाँ खंड महाबंध है। इसमें बंध्यनीय अधिकार की समाप्ति के पश्चात् प्रकृति बन्ध, प्रदेशबन्ध, स्थिति बन्ध और अनुभोग बन्ध का विवेचन किया गया है।

इस ग्रन्थ का रचनाकाल शक संवत की प्रथम शती माना गया है। इस पर आचार्य वीरसेन ने 'धवल टीका' लिखा है। ✓

नोट 2 कषाय प्राभृत : शौरसेनी आगम साहित्य का दूसरे ∧ महत्वपूर्ण ग्रन्थ कषाय प्राभृत है जिसके रचयिता आचार्य गुणधर हैं। इसमें कुल 233 गाथा सूत्र हैं, जो 16 अधिकारों में विभाजित हैं। इनमें राग-द्वेष का कथन करते हुए क्रोध, मान, माया, लोभ कषायों की राग-द्वेष परिणति और उनके प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश बन्ध संबंधी विशेषताओं का विवेचन किया गया है। इस पर जिनसेन ने 'जय धवल' टीका लिखा है।

कषाय प्राभृत का रचना काल कुन्दकुन्दाचार्य से पूर्व का है। इनका समय भूतबलि और पुष्पदन्त से पहला का माना जाता है। अतः इनका समय ई० सन् द्वितीय शताब्दी और प्रथम शताब्दी के मध्य सुनिश्चित है।

'कषाय पाहुड' पर जिनसेन ने 'जयधवला' टीका लिखा है। ✓

Scanned by CamScanner

पंचास्तिकाय :

शौरसेनी भाषा में रचित पंचास्तिकाय का प्रमुख स्थान है। इसके रचयिता जैन दर्शन के मर्मज्ञ विद्वान आचार्य कुन्दकुन्द हैं। यह ग्रन्थ दो श्रुत स्कंधों में विभाजित है।

प्रथम श्रुत स्कंध में षट्द्रव्य, पांच अस्तिकाय का विस्तृत विवेचन किया गया है। साथ ही इसमें द्रव्य का लक्षण, द्रव्यभेद, सप्तभंगी, गुण पर्याय, काल द्रव्य का स्वरूप, जीव का लक्षण, सिद्ध स्वरूप, जीव-पुद्गल-बंध, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल के लक्षणों का प्रतिपादन किया गया है।

दूसरे श्रुत स्कंध में पुण्य-पाप, जीव-अजीव, आस्त्रव, बंध, संवर, निर्जरा तथा मोक्ष (मार्ग के) के कथन के साथ मोक्ष मार्ग का निरूपण किया गया है।

इस ग्रन्थ के टीकाकार अमृत-चन्द्र सूरि एवं जयसेनाचार्य हैं।

प्रवचनसार :

इस ग्रन्थ के रचयिता आचार्य कुन्दकुन्द हैं। इसमें 275 गाथाएँ हैं, जो तीन अधिकारों में विभक्त हैं :—
(1) ज्ञानाधिकार (2) ज्ञेयाधिकार (3)-चरित्राधिकार।

1) ज्ञानाधिकार :

इसके प्रथम ज्ञानाधिकार में आत्मा एवं ज्ञान का एकत्व तथा अन्यत्व, सर्वज्ञ की सिद्धि, इन्द्रिय-अतीन्द्रिय सुख, शुभ, अशुभ और शुद्धोपयोग एवं मोक्षक्षय आदि का प्ररूपण किया गया है।

2) ज्ञेयाधिकार :

दूसरे ज्ञेयाधिकार में द्रव्य, गुण, पर्याय का स्वरूप, सप्तभंगी, ज्ञान, कर्म और कर्मफल का स्वरूप, मूर्त और अमूर्त द्रव्यों के गुण, काल आदि के गुण और पर्याय, प्राण, शुभ-अशुभ उपयोग, जीव का लक्षण, जीव-पुद्गल का संबंध एवं शुद्धात्मा आदि का प्रतिपादन किया गया है।

Scanned by CamScanner